इच्छाशक्ति का विलक्षण प्रभाव

अंडे से निकले पक्षी के दूर गगन में उड़ जाने का एक ही कारण है, वह है-इच्छाशक्ति। इच्छा व शक्ति दो शब्द हैं जिनसे मनुष्य नर से नारायण बन सकता है। कहा जाता है कि दुनिया का इतिहास केवल इच्छाशक्ति से भरपूर मुट्ठी भर लोगों की कहानी है। इच्छाशक्ति का मतलब ताकत या किसी के पहलवान होने से नहीं जुड़ा। इच्छाशक्ति से तात्पर्य है - अपने निश्चय को पूरा करने के लिए संकल्प या प्रतिबद्धता।

हम जो संकल्प करते हैं, उस दृढ़-इच्छाशक्ति के सहारे अपने मुकाम तक आसानी से पहुँचा जा सकता है क्योंकि हमारे संकल्प के साथ दृढ़ प्रतिज्ञा जुड़ी होती है। दुष्यन्त कुमार ने इसीलिए कहा है : **"कैसे आकाश में सुराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों!"**

इसी संकल्पशक्ति के रहते मदर टेरेसा ने समाज-सेवा के क्षेत्र में, गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने साहित्य के क्षेत्र में, नेपोलियन ने तलवार के बल पर समर के क्षेत्र में, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने मैदाने जंग में, विवेकानंद ने अद्भुत वाणी के बल पर अध्यात्म के क्षेत्र में और मीरा ने भक्ति के क्षेत्र में अपने लक्ष्य को पाने में सफलता प्राप्त की और दुनिया में अपना नाम रोशन किया।

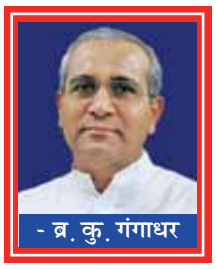

प्रबल या दृढ़-इच्छाशक्ति रखने वाले अपने कार्य के प्रति कृतसंकल्प रहते हैं। उनके संकल्प के सामने देव, दानव और यहाँ तक कि भाग्य भी समर्पण कर देता है। इस सन्दर्भ में उदाहरण प्रस्तुत है :

एक माता-पिता ने एक प्रकांड पंडित को अपने बालक का हाथ दिखाया। पंडित जी ने हाथ देखकर बड़ी निराशा से बताया, "बालक के भाग्य में विद्या नहीं है।" यह सुनकर बालक ने पूछा, "महाराज, कहाँ होती है विद्या की रेखा? कृपया मुझे बताएँ।" पंडित जी ने बालक के हाथ में संकेत से रेखा का स्थान बता दिया। उसी क्षण बालक एक तेज धार वाला चाकू लाया और उसकी नोक से एक गहरी रेखा हथेली पर खींच दी, खून की धारा बह चली। पंडित जी बालक के साहस से चकित हो उठे। उन्होंने बालक के साहस की सराहना करते हुए कहा, "चाकू से तो हाथ पर रेखाएं नहीं बनतीं, लेकिन दृढ़-निश्चय से यह सम्भव है कि तुम विद्या प्राप्त कर सकते हो।"

चूंकि बालक के मन में विद्या प्राप्त करने की दृढ़-इच्छाशक्ति विद्यमान थी, उसने उसी क्षण दृढ़-संकल्प लिया और भाग्य में विद्या न होने की घोषणा को मिथ्या सिद्ध कर वह एक दिन महान व्याकरणाचार्य बन गया। आप जानते हैं वह बालक कौन था? उसका नाम था पाणिनि जिन्हें विश्व में संस्कृत के महान व्याकरणाचार्य के नाम से जाना जाता है।

कहा जाता है कि एक बार महात्मा बुद्ध अपने शिष्य के साथ जंगल में जा रहे थे। रास्ते में पत्थर की एक बड़ी चट्टान देखकर शिष्य ने बुद्ध से पूछा - 'भगवन! क्या इस चट्टान पर किसी का शासन सम्भव है?' बुद्ध ने शिष्य की जिज्ञासा को शान्त करते हुए कहा - 'पत्थर से कई गुना शक्ति लोहे में होती है। इसलिए पत्थर को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर देता है। तो फिर लोहे से भी कोई वस्तु श्रेष्ठ होगी? शिष्य ने प्रश्न किया। क्यों नहीं, अग्नि है जो लोह अहं को गलाकर द्रव्य रूप में बदल देती है, बुद्ध ने कहा। शिष्य ने पूछा-अग्नि की विकराल लपटों के सम्मुख किसी की क्या चल सकती होगी? केवल जल है, जो उसकी उष्णता को शीतल कर देता है, बुद्ध ने कहा। पुनः शिष्य ने पूछा– जल से टकराने की ताकत किसमें होगी? भगवान बुद्ध शिष्य से बोले– ऐसे क्यों सोचते हो वत्स! इस संसार में एक से एक शक्तिशाली हैं। वायु का प्रवाह जलधारा की दिशा बदल देता है। संसार का प्रत्येक प्राणी वायु के महत्व को जानता है। शिष्य बोला - जब वायु ही जीवन है, फिर इससे अधिक महत्वपूर्ण वस्तु क्या होगी? भगवान ने हँसते हुए शिष्य को जबाव दिया - मनुष्य की दृढ़-इच्छाशक्ति जिसके द्वारा वायु भी वश में हो जाती है। मानव की यह शक्ति ही सबसे बड़ी है।

कुछ वर्षों पहले बंगाल में एक 'साहंग स्वामी' नामक युवक हुआ, बाद में 'टाइगर योगी' के नाम से प्रसिद्ध हो गया। वह बचपन में इतना कमज़ोर और डरपोक था कि किसी जानवर को देखकर पसीना छूट जाता था, लेकिन उसके भीतर एक ललक उठती कि मैं इतना शक्तिशाली हो जाऊँ कि बाघ और शेरों को चूहे-बिल्ली की तरह पकड़ सकूँ। वह इस विश्वास के साथ जंगल में घूमता और मन में दृढ़ इच्छाशक्ति लिये वह जंगल के जानवरों की तरफ देखता। धीरे-धीरे इच्छाशक्ति ने चमत्कार पैदा कर दिया कि वह सचमुच अपने उद्देश्य में सफल हो गया। जंगल में जाकर जब वह हिंसक जीवों पर अपनी तीक्ष्ण दृष्टि का आघात करता, दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ उनके सामने तनकर खड़ा हो जाता और आँख से आँख मिलाता तो भेड़िए, शेर, बाघ, चीते, बिल्ली की तरह डरने लग जाते या दुम दबाकर भाग जाते।

महान दार्शनिक और सन्यासी स्वामी विवेकानंद ने भी अपने एक भाषण में कहा था कि यदि किसी व्यक्ति को काले साँप ने भी डस लिया हो और वह 100 बार दृढ़तापूर्वक माने कि ऐसा कुछ नहीं है तो उसे ज़हर नहीं चढ़ेगा। यह इच्छाशक्ति का एक छोटा-सा उदाहरण है।

यह सब घटनाएँ बताती हैं कि मनुष्य के भीतर ऐसी विलक्षण शक्ति है। वह केवल अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति या इरादे के बल पर जो चाहे, जैसा चाहे, कर सकता है। अपने जीवन को खुशहाल और आनंदमय बना सकता है। किसी ने ठीक ही कहा है :

उन्हें ही ताज मिलते हैं, उन्हीं को तख्त मिलते हैं,
जो मंजिल पर पहुँचने के इरादे सख्त रखते हैं।
कठिन हो राह कितनी भी कभी न हार मानें जो,
मिलेगी ही मंजिल यक़ीं हर वक़्त रखते हैं।

मिसाल बनना है तो ध्यान रहे जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख सब करेंगे

कभी कड़वा शब्द, थकावट का शब्द न अन्दर से, न मुख से निकले। शक्ल ऐसी थकी हुई दिखाई न पड़े, ऐसा पुरुषार्थ करना है, मिसाल बनना है। अभी ऐसे मिसाल बनेंगे तो बाबा खुश हो जायेगा।

विकर्माजीत बनने की निशानी क्या है? कोई विकल्प आ नहीं सकता। इसमें 3 बातें हैं तन, मन और धन... वह पूरा समर्पण है। न तन अपना है, न मन अपना है, न धन अपना है। जहाँ हमारा मन होगा वहाँ हमारा तन होगा, जहाँ तन है अभी तन में आत्मा है पर मन कहाँ हैं? मनमनाभव इसलिए भले शरीर की आयु बड़ी हो जाए, पर आत्मा का बल, योग का बल, सेवा का फल, सेवा भी वन्डरफुल है। अभी कौन पालना कर रहा है? निश्चयबुद्धि विजयन्ती, निश्चय में विजय है। यह अनुभव करने से औरों को भी संग का रंग लगाते इतने आ गये क्योंकि जैसे कहते हैं जैसा अन्न वैसा मन, जैसा संग वैसा रंग, जैसा पानी वैसी वाणी। दृष्टि की बहुत वैल्यू है ना, तो अभी सभी को दृष्टि का महत्व होना चाहिए। दृष्टि किसलिए लेते हैं? दृष्टि में बाबा होने से शक्ति मिल जाती है।

दूसरा किसी के भी नाम-रूप में ना फँसना और ना फँसाना। यह बाबा ने अच्छी पालना दी है। बाबा अभी जो आप कहते हो वही बनना है बस। बाबा आप बने हैं, आपको देखके कितनों को बनने की प्रेरणा मिली है। हरी, वरी, करी वाला अवगुण न हो। न वरी, न हरी, न करी। कभी कड़वा शब्द, थकावट का शब्द न अन्दर से, न मुख से निकले। शक्ल ऐसी थकी हुई दिखाई न पड़े, ऐसा पुरुषार्थ करना है, मिसाल बनना है। अभी ऐसे मिसाल बनेंगे तो बाबा खुश हो जायेगा। निमित्त बनने के लिए 5 गुण चाहिए। पवित्रता 100 परसेन्ट, फिर सत्यता ऑटोमेटिकली काम करती है, फिर धैर्यता, मैंने देखा है सेवा में, चाहे सम्बन्ध में धैर्य बहुत चाहिए। धीरज मीठा बनाती है। धीरज है तो नम्रता काम करती है। कभी भी अभिमान नहीं होता है इसलिए नम्रता बहुत ज़रूरी है। नम्रता से फिर मधुरता। यह पाँच बातें नेचुरल लाइफ में एक मिसाल बनाती है। परन्तु फिर मैं कहती हूँ इसमें जो एडीशन या थोड़ी कमी हो सभी उस कमी को पूरा करें तो कितनी खुशी की बात है। आजकल और कुछ नहीं करना है एक मिसाल बनने का ऐम रखें, जैसा कर्म मैं करूँगी मुझे देख और करेंगे इसलिए बड़ा खबरदार, होशियार, सावधान रहना है। ऐसा सावधान रहना है जो एकानामी और एकनामी कभी सेवा अर्थ भी फालतू खर्च नहीं किया है। एक के नाम से काम करो फिर एकानामी से करो, तो यह सब बातें मिसाल बनने के लिए बहुत काम आयेंगी।

गुणों का दान व खज़ाने जमा करने की विधि

बाबा कहते हैं - बच्चे आपकी चलन से, आपके सम्बन्ध-सम्पर्क से किसको भी गुणों की फीलिंग आये। जैसे ये बहुत शान्त रहते हैं, बातों में नहीं आते हैं, यह रमणीक रहते हैं, यह थोड़ा गम्भीर रहते हैं, यह सब पता तो पड़ता है। तो इस रीति से भी हम देखें कि हमारा जो भी कर्म होता है वो हर गुणों से सम्पन्न होता है?चलते-फिरते मुझे अन्तर्मुखता के गुण की फीलिंग आती है? कोई काम नहीं है उस समय मैं एकदम बिल्कुल अन्तर्मुखी हो जाऊं तो यह अभ्यास है? हमारे गुण-स्वरूप को देख दूसरे में गुणों को धारण करने की प्रेरणा आती है, उमंग-उत्साह आता है तो यह हो गया गुण दान। तो मैं अपने सम्पर्क द्वारा गुण दान कर रहा हूँ, कर रही हूँ? ये चेक करो। तो ज्ञान, गुण, शक्तियाँ और समय...यह चारों ही खज़ाने जो हैं, उससे अगर हम भरपूर रहें तो सम्पन्नता की स्टेज के अनुभवी हो गये। अगर इन चारों में से कोई भी एकाध खज़ाना कम है या नहीं है तो हम सम्पन्नता की स्टेज का अनुभव नहीं कर सकेंगे। कभी-कभी करेंगे नेचुरल नहीं होगा।

हमारे गुण-स्वरूप को देख दूसरे में गुणों को धारण करने की प्रेरणा आती है, उमंग-उत्साह आता है तो यह हो गया गुण दान।

ऐसे ही बाबा कहते हैं इन खज़ानों को जमा करने का साधन क्या है? हम अपने पुरुषार्थ से खज़ाने जमा करते हैं। दूसरा है हम जो एक दो को स्वमान देते हैं, स्वमान में रहते हैं तो उस निःस्वार्थ सेवा द्वारा हम पुण्य का खाता जमा करते हैं। और एक दो के साथ सेवा में भी निःस्वार्थ रहते हैं, बेहद में रहते हैं तो हमें दुआयें मिलती हैं। तो एक है अपने पुरुषार्थ से, दूसरी हैं दुआयें, तीसरा है पुण्य। यह तीन प्रकार से हम अपने खज़ानों को जमा कर सकते हैं। तो यह चेक करो। इसकी चाबी है निर्मान और निमित्त भाव। तो सम्पन्नता को हम इन बातों से चेक करें। निमित्त भाव में मैं-पन और मेरापन खत्म हो जाता है क्योंकि करावनहार बाबा है, मैं तो ट्रस्टी हूँ। सिर्फ घर-गृहस्थी वाले ही ट्रस्टी नहीं हैं। कोई भी हमारी डयूटी है तो भी हम ट्रस्टी हैं, मालिक तो हमारा बाबा है हम निमित्त हैं। तो निमित्त भाव में निर्मानता भी आती है। उनकी वाणी भी निर्मल होती है। तो एक निमित्त भाव में यह तीनों प्राप्तियाँ होती हैं। तो निमित्त भाव खज़ाने जमा की चाबी है।

स्वराज्य अधिकारी आत्मा की निशानियां - सूक्ष्म चेकिंग

मेरा पहला मंत्री मेरे ऑर्डर में है? ऑर्डर में है तो शुद्ध संकल्प स्वतः रहेंगे। फिर यह क्यों आता मेरा यहाँ अपमान हुआ? यह संकल्प उठाना भी तो अशुद्धता है।

मीठे बाबा ने हम बच्चों को स्वराज्य अधिकारी बनाया है। बाबा कहते तुम हो मेरे राजा बच्चे। तो हे राजे! अपने आप से पूछो - कि मेरे 10 मंत्री (कर्मेन्द्रियां) मेरा कहना मानते हैं? पहले यह मेरी स्तुति करते हैं? फिर मुझ आत्मा के जो संस्कार हैं वह संस्कार मेरी स्तुति करते हैं? जब मेरे संस्कार मेरी स्तुति करें अर्थात् ऑर्डर में रहें तब दूसरे भी स्तुति करेंगे। बाबा ने कहा मुख्य 3 मंत्री हैं मन, बुद्धि और संस्कार। तो मेरा मन सदा मेरे चरणों में रहता अर्थात् मैं जो पवित्र आत्मा हूँ, मेरा मन सदा ऐसा ही स्वच्छ पवित्र और सदा ऊंचा रहता हूँ? मेरा पहला मंत्री मेरे ऑर्डर में है? ऑर्डर में है तो शुद्ध संकल्प स्वतः रहेंगे। फिर यह क्यों आता मेरा यहाँ अपमान हुआ? यह संकल्प उठाना भी तो अशुद्धता है। अपने से पूछो मैं अपनी महानता की ऊंची स्थिति पर रहता हूँ? जब मैं ऊंची स्थिति पर रहूँगी तो सब मेरा मान करेंगे। कई कहते हैं मेरी वृत्ति अच्छी नहीं, मेरी वृत्ति चंचल होती है, अगर मैं यही रिपोर्ट करती तो मैं दूसरे से क्या मान मागूँ। पहले तो अपनी रिपोर्ट बन्द करो। तुम पहले अपने मन्त्री से तो प्यार पाओ पीछे दूसरे से मांगो। अगर वृत्ति चंचल है माना मंत्री कन्ट्रोल में नहीं है। कहते हैं दक्ष प्रजापिता ने यज्ञ रचा। अब दस शीश वाले रावण को स्वाहा करने के लिए हमारे बाबा ने यह रूद्र यज्ञ रचा है। इसमें ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बच्चों ने अपना सब कुछ स्वाहा कर दिया। तो हरेक पूछे मैंने अपने दस राक्षसों को स्वाहा किया है? इन्द्रिय जीत बनने का मतलब है अपनी कर्मेन्द्रियों को दिव्य बनाना। तो चेक करो कि मेरे कान दिव्य बने हैं? या अभी तक कनरस सुनने का शौक है? परचिंतन पतन की ओर ले जायेगा। फिर ऐसा परचिन्तन वाला मान पा सकता है? हमारे यह नयन दूसरे को प्यार की भावना से, भाई-भाई की दृष्टि से, बाबा के रत्न देखने के लिए हैं, अगर यह नयन बुरी दृष्टि से देखते, द्वेष की दृष्टि से देखते तो क्या यह नयन मुझे मान देंगे! अगर नयनों ने बुरी नज़र से देखा, द्वेष दृष्टि डाली तो मेरे नयन ही मुझे अपमानित करते। दुःख देते फिर दूसरे से मान कैसे मिलेगा। कोई-कोई कहते हैं यह मुझे इतना प्यार नहीं देता। मैं पूछती तुमने अपने को कितना प्यार किया? मैं अपने संकल्प को शुद्ध रखूंगी तो प्यार मिलेगा। मेरी बुद्धि अगर परचिन्तन में घूमती, सत्यता को छोड़, स्वच्छता को छोड़ असत्यता की ओर जा रही है तो पहले मेरी बुद्धि ने ही मुझे प्यार नहीं किया। अगर बुद्धि ही प्यार नहीं करती तो दूसरे क्या करेंगे! पहले देखो मेरे संस्कार मुझे रिस्पेक्ट देते हैं? मैंने अपने संस्कारों की चंचलता को स्वाहा किया है? अगर मेरे संस्कार ही मुझे रिस्पेक्ट नहीं देते तो दूसरे क्या देंगे!

जिसमें ज़रा भी मूड ऑफ की आदत है, उसे मान मिल नहीं सकता। मूड ऑफ माना ऑफ। उसे कौन-सी प्रेम की ऑफर मिलेगी! उसे कौन आफरीन देगा? अगर कहते ऑफ होने की आदत है, तो आदत शब्द ही बुरा है। दिव्यता माना गुण। मेरा गुण है - दिव्य रहना। जहाँ दिव्यता है वहाँ मान-अपमान का सवाल ही समाप्त हो जाता है। जहाँ मांगते हो कि मान मिले, वहाँ वह दूर हो जाता है। आज के राजनेतायें मान के लिए चेयर मांगते, आज मिलती कल चेयर उठाकर फेंक देते क्योंकि है ही प्रजातन्त्र। हम तो राजाओं के राजा हैं, हम कभी मांग नहीं सकते। राजा कभी नहीं कह सकता कि यह चपरासी मेरी इज्जत गंवाता है। राजा का तो ऑर्डर चलता। तो पूछो मैं राज्य-अधिकारी हूँ या मैं अपने चपरासियों के अधीन हूँ?